Resource: अध्ययन नोट्स - पुस्तक परिचय (टिंडेल)

Aquifer Open Study Notes (Book Intros)

This work is an adaptation of Tyndale Open Study Notes © 2023 Tyndale House Publishers, licensed under the CC BY-SA 4.0 license. The adaptation, Aquifer Open Study Notes, was created by Mission Mutual and is also licensed under CC BY-SA 4.0.

This resource has been adapted into multiple languages, including English, Tok Pisin, Arabic (عربي), French (Français), Hindi (हिंदी), Indonesian (Bahasa Indonesia), Portuguese (Português), Russian (Русский), Spanish (Español), Swahili (Kiswahili), and Simplified Chinese (简体中文).

अध्ययन नोट्स - पुस्तक परिचय (टिंडेल)

DAN

दानिय्येल

जब दानिय्येल वयस्क हो रहा था, तब बाबेल समृद्धि हो रहा था। इस बीच, इस्राएल के लोगों को यहूदा से बाबेल की बँधुवाई में ले जाया जा रहा था। क्या परमेश्वर के लोग फिर से प्रभु के चुने हुए राष्ट्र के रूप में आनंदमय जीवन जीने की आशा कर सकते थे? एक बंदी और सरकारी अधिकारी के रूप में दानिय्येल के अनुभवों के माध्यम से, और विशेष संदेशों के माध्यम से, परमेश्वर ने दानिय्येल को अपनी शक्ति और इतिहास के लिए अपनी योजना प्रगट की, यह दिखाते हुए कि वह अपने लोगों को बँधुवाई से और यहां तक कि मृत्यु से भी बचाएंगे।

पृष्ठभूमि

605 ई.पू. में, बाबेल के नबूकदनेस्सर द्वितीय (605–562 ई.पू.) ने यरूशलेम पर हमला किया और कुछ इस्राएलियों को बंदी बनाकर बाबेल ले गया, जिनमें यहूदा के शाही परिवार के कुछ युवक भी शामिल थे (1:1–4)। इस ऐतिहासिक घटना में, परमेश्वर ने अपने लोगों को बँधुवाई में भेजना शुरू कर दिया जैसा कि उन्होंने चेतावनी दी थी कि वह करेंगे। इस्राएलियों ने परमेश्वर की वाचा तोड़कर उनके साथ विश्वासघात किया था (व्य.वि. 28:36, 64; यिर्म 11:1–17; 25:11–12; 29:10–11)। शक्तिशाली राजा नबूकदनेस्सर के माध्यम से, परमेश्वर ने अपने लोगों इस्राएल का न्याय किया (यिर्म 25:9)। उस समय, दानिय्येल और उसके मित्रों को नबूकदनेस्सर के आदेशानुसार संस्कृति ग्रहण करने की एक प्रक्रिया को शुरू करना पड़ा, जिससे प्रभु के पवित्र लोगों के रूप में उनकी पहचान को कुशलता से निष्क्रिय करते हुए उनके अन्यजातिय जीवन शैली में समाहित हो जाने का खतरा उत्पन्न हो गया था (निर्ग 19:5–6 देखें)।

इस बीच, बाबेल के लोगों ने यहूदा और यरूशलेम को तबाह करना जारी रखा। 597 ई.पू. में, और इस्राएलियों को बाबेल ले जाया गया और 586 ई.पू. में, यरूशलेम को नष्ट कर दिया गया। 586 ई.पू. के बाद, यहूदा अब एक राष्ट्र नहीं रहा था; परमेश्वर के लोग पूरी तरह से असहाय और निराश थे। अपने अस्तित्व के इस निम्न बिंदु पर, परमेश्वर के लोग राष्ट्रों की पूँछ बन गए, न कि उनका सिर (व्य.वि 28:13, 44 देखें)। ऐसा लगा कि वे केवल बाबेल में समाहित हो जायेंगे और इतिहास के मंच से गायब हो जायेंगे।

यह वादा कि अब्राहम के वंशज सभी राष्ट्रों के लिए आशीष का मूल बनेंगे, निराशाजनक रूप से असफल प्रतीत हो रहा था (उत 12:1–3)। प्राचीन निकट पूर्व की महान अन्यजातिय महाशक्तियों ने, पहले अश्शूर और फिर बाबेल ने दुनिया पर शासन किया। इस्राएल के साथ बँधुवाई में क्या होगा? अब्राहम, इसहाक, याकूब, मूसा (निर्ग 19–20), और दाऊद (2 शमू 7:1–29) से किए गए परमेश्वर के वादों का क्या होगा? क्या परमेश्वर अपने भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से कहे गए आशा भरे वचनों के आधार पर कार्य करेंगे? परमेश्वर अपने लोगों को बँधुवाई से कैसे बचाएंगे?

दानिय्येल ने अपनी खराई को बनाए रखा, अपने लोगों को सम्मानित किया, और बेबल की बँधुवाई के अंत तक कई बाबेली राजाओं के शासनकाल के दौरान अपने परमेश्वर की महिमा की। जब परमेश्वर के लोग "बँधुवाई की मृत्यु" (यहेज 37) को सहन कर रहे थे, परमेश्वर ने दानिय्येल को भविष्य के दर्शन दिखाए, जब एक आनेवाले राजा सदा के लिए शक्ति और शासन प्राप्त करेंगे।

539 ई.पू. में, फारस के कुस्रू ने दुनिया को हिला कर रख दिया, उसने बाबेल पर आक्रमण करके, राजधानी में प्रवेश करके उसे और उसके ईश निंदक शासक बेलशस्सर को अपने अधीन कर लिया, ठीक वैसे ही जैसे यशायाह ने भविष्यवाणी की थी कि वह करेगा (यशा 44:26–45:7)। दानिय्येल उस आदेश का साक्षी बना जिसके अनुसार बंदी लोग अपने घर लौट सकते थे (एज्रा 1:2–4 देखें)। इससे यिर्मयाह की भविष्यवाणी पूरी हुई (यिर्म 25:11–12; 29:10–11) और उसी वर्ष के शुरू में की गई दानिय्येल की प्रार्थना का उत्तर मिला (दानि 9:1–19)। सत्तर वर्ष के दासत्व के बाद, परमेश्वर के लोगों को बहाल किया जा रहा था।

प्रभु ने दानिय्येल के माध्यम से इतिहास की पृष्ठभूमि को दर्शनों और स्वप्नों से रंग कर अपने पवित्र लोगों को भविष्य के लिए प्रोत्साहन दिया। परमेश्वर ने अपने लोगों को एक डरानेवाले भविष्य का सामना करते समय नई आशा देने के लिए उनसे बात की।

सारांश

दानिय्येल की पुस्तक 605 ई.पू. से लेकर लगभग 535 ई.पू. तक की अवधि का वर्णन करती है। अध्याय 1–6 में ऐसी घटनाएँ और कहानियाँ हैं जो दानिय्येल और उसके मित्रों के प्रति परमेश्वर की विश्वासयोग्यता को वैसे ही प्रदर्शित करती हैं, जैसे वे परमेश्वर और उनकी व्यवस्था के प्रति विश्वासपात्र बने रहे थे। तीन बार, इब्रानी बन्धुओं को ऐसे शाही आदेशों का सामना करना पड़ा जो परमेश्वर की व्यवस्था के विरुद्ध थे (अध्याय 1, 3, 6); तीनों बार, उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा मानते हुए बुद्धि का प्रदर्शन किया, और परमेश्वर ने उन्हें हानि से बचा लिया। तीन बार, परमेश्वर ने दानिय्येल के माध्यम से उन रहस्योद्घाटनों की व्याख्या करने के लिए बात की, जो उन्होंने अन्य जाति के राजाओं को दिए थे (अध्याय 2, 4, 5)। दानिय्येल के वचन और उसके बाद की घटनाओं से यह पता चलता है कि परमेश्वर पृथ्वी पर सर्वोच्च शक्ति और अधिकार रखते हैं।

अध्याय 7–12 में, ध्यान इतिहास के प्रवाह पर परमेश्वर की प्रभुता पर केंद्रित हो जाता है। अध्याय 7 में पशु प्रतीकों का उपयोग करके वही कहानी बताई गयी है जो अध्याय 2 में है: विश्व का इतिहास परमेश्वर के राज्य की स्थापना में समाप्त होगा, लेकिन पहले परमेश्वर और उनके उद्देश्यों का घोर विरोध होगा। अध्याय 8 फारस और यूनान की भूमिकाओं पर प्रकाश डालता है, जिसका समापन एक दुष्ट शासक के कृत्यों में होता है जो परमेश्वर के लोगों का विरोध करता है। अध्याय 9 में दानिय्येल की अद्भुत प्रार्थना है जो यिर्मयाह की सत्तर वर्ष के दासत्व की भविष्यवाणी से प्रेरित है (9:1–2)। इस प्रार्थना ने परमेश्वर के हृदय को छु लिया और बँधुवाई को समाप्त करने में मदद की। प्रार्थना के परिणामस्वरूप, स्वर्गदूत गब्रिएल को आने वाले सत्तर सप्ताहों को प्रगट करने के लिए दानिय्येल के पास भेजा गया, जो कि परमेश्वर की अपने लोगों को स्थापित करने और उनके उत्पीड़कों से निपटने की योजना का एक संक्षिप्त विवरण है। अध्याय 10–12 में, पुस्तक एक अंतिम दर्शन के साथ समाप्त होती है जो कुस्रू के तीसरे वर्ष (536 ई.पू.) से लेकर यूनान और रोम के समय तक और पुनरुत्थान के समय तक के इतिहास को चित्रित करती है। दानिय्येल अपनी बुलाहट के प्रति विश्वासयोग्य था, और परमेश्वर वादा करते हैं कि वह अंत में उसे जिलाएंगे (12:13)।

लेखकत्व और तिथि

विद्वानों ने इस बात पर अंतहीन बहस की है कि दानिय्येल की पुस्तक को अंतिम रूप कब दिया गया था। अधिकांश पारंपरिक विद्वानों का तर्क है कि दानिय्येल ने यह पुस्तक 500 ई.पू. के अंत में लिखी थी। यह पुस्तक भविष्यवाणी होने का दावा करती है (2:29–31; 4:24; 7:1–12:13), और लेखक ने दानिय्येल को 500 के दशक में रखा है (2:1; 5:1; 10:1)। यह पुस्तक बाबेल के इतिहास का उत्कृष्ट ज्ञान प्रदर्शित करती है, हालांकि कुछ ऐतिहासिक मुद्दे भी उठते हैं।

अन्य विद्वान इस पुस्तक की तिथि लगभग 164 ई.पू. होने का तर्क देते हैं, मुख्य रूप से क्योंकि दानिय्येल ने उस समय तक की घटनाओं का वर्णन किया है - 11:1–35 में की गई भविष्यवाणियां 190 से 164 ई.पू. के बीच हुई घटनाओं के बारे में इतनी विस्तृत मानी जाती हैं कि उन्हें 300 वर्ष पहले लिखा जाना असंभव था।

हालांकि, इस पुस्तक की प्रारंभिक तिथि को अस्वीकार करने में समस्याएँ हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वर्तमान रूप में पुस्तक का लेखक स्पष्ट रूप से दानिय्येल को ही माना जाता है; और बाद की तिथि को मानने का अर्थ होगा कि दानिय्येल लेखक नहीं हो सकता था। यदि दानिय्येल ने स्वयं भविष्यवाणियां नहीं लिखी होतीं, तो पुस्तक के दावे में उस सत्यनिष्ठा की कमी होती जो परमेश्वर के प्रेरित भविष्यद्वक्ताओं से अपेक्षित है और इसे इब्रानी संहिता में स्वीकार किए जाने में कठिनाई का सामना करना पड़ता। दानिय्येल के प्रमुख दावों में से एक यह है कि परमेश्वर भविष्यवाणी कर सकते हैं (2:27–29; 10:21)। इस बात से इनकार किए बिना कि विस्तार की सटीकता उल्लेखनीय है, इन भविष्यवाणियों को असंभव नहीं माना जाना चाहिए: परमेश्वर अपने भविष्यद्वक्ताओं को भविष्य के बारे में कितनी विस्तृत जानकारी दे सकते हैं, यह कौन कह सकता है?

दानिय्येल के दर्शनों में भविष्यसूचक साहित्य की विशेषताएँ भी हैं। भविष्यसूचक साहित्य विशेष रूप से अंतर-नियम काल (400 ई.पू. के बाद) के यहूदी लेखन में लोकप्रिय था, इसलिए कहा गया है कि यह पुस्तक उस समय से पहले नहीं लिखी जा सकती थी। हालांकि, हाल के अध्ययनों से यह तर्क दिया गया है कि बँधुवाई के समय से बाइबिल की पुस्तकों में भविष्यसूचक विचारधारा मौजूद है। इसलिए दानिय्येल की पुस्तक को बाद में होने वाली महा विनाश और अंत के लिए एक नमूने के रूप में माना जा सकता है।

सारांश में, यह मानना गलत नहीं होगा कि दानिय्येल की पुस्तक को 500 ई.पू. में स्वयं दानिय्येल द्वारा लिखा गया था। बाद की लेखन तिथि के तर्क समस्याओं से रहित नहीं हैं, और पारंपरिक दृष्टिकोण पुस्तक को प्रेरित भविष्यवाणी के रूप में स्वीकार करते हैं।

दानिय्येल साहित्य के रूप में

दानिय्येल में इतिहास तो है ही, परन्तु इसमें और भी बहुत कुछ है। यह सांसारिक घटनाओं के पीछे के वास्तविक अर्थ और महत्व को प्रदर्शित करने के लिए इतिहास के धार्मिक पाठ सिखाता है। यह घटनाओं का विवरण देने के अपने तरीके से इतिहास में परमेश्वर के हाथ और योजना को दर्शाता है।

दानिय्येल एक बुद्धि साहित्य के रूप में। दानिय्येल एक बुद्धि की पुस्तक है जिसका उद्देश्य परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर

के मार्गों में बुद्धिमान बनाना है। बुद्धिमान व्यक्ति कष्ट सहने से शुद्ध होता है, धार्मिकता का मार्ग ढूंढ़ता है, और दूसरों को भी उस मार्ग पर ले जाता है (11:33–35; 12:3)। बुद्धिमान व्यक्ति जानता है कि परमप्रधान परमेश्वर वही ईश्वरों के परमेश्वर हैं, कि वह भविष्य को अपने हाथों में रखते हैं, और वह अपने लोगों को किसी भी विपदा से बचा सकते हैं (3:16–18; 6:21–22; 12:1–3)।

दानिय्येल एक भविष्यसूचक साहित्य के रूप में। दानिय्येल के कुछ भाग भविष्यसूचक साहित्य नामक एक शैली से संबंधित हैं (*भविष्यसूचक* शब्द एक यूनानी शब्द अपोकालुप्सिस से सम्बंधित है, जिसका अर्थ है "प्रकाशन")। यह शैली सांसारिक इतिहास के पर्दे को हटाती है और पर्दे के पीछे परमेश्वर, स्वर्गदूतों और आत्मिक शक्तियों की गतिविधियों को प्रगट करती है। ये गतिविधियां संसार की ऐतिहासिक घटनाओं पर प्रभाव डालती हैं। भविष्यसूचक साहित्य समृद्ध प्रतीकात्मक भाषा का उपयोग करके वास्तविकता को प्रगट करता है, जैसे कि मूर्तियाँ, पशु या सींग जैसे तत्व राजाओं, साम्राज्यों और व्यक्तियों को दर्शा सकते हैं।

भविष्यसूचक साहित्य की व्याख्या उसके चित्रण के उद्देश्य के अनुसार करना महत्वपूर्ण है। चित्रण के पीछे की वास्तविकता और सत्य क्या है? किसी अनुच्छेद के प्रतीकों की सही व्याख्या करने के लिए साहित्यिक संदर्भ और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की जांच की जानी चाहिए। कभी-कभी चित्रण की व्याख्या के लिए आवश्यक अंतर्दृष्टि पाठ के भीतर ही मिल जाती है (7:1–14, 16–17, 23–25)। अन्य मामलों में, सामाजिक, राजनीतिक, सैन्य या सांस्कृतिक परिवेश का अध्ययन एक सहायक अंतर्दृष्टि प्रदान करेगा। उदाहरण के लिए, बाबेल के इतिहास का अध्ययन यह समझने में सहायक हो सकता है कि बाबेल के लिए एक निश्चित छवि (एक सुनहरा सिर या सिंह) क्यों उपयुक्त है। सांसारिक घटनाओं के पीछे जाकर उनके वास्तविक अर्थ को प्रदर्शित करके, दानिय्येल की पुस्तक कई धार्मिक पाठ सिखाती है।

दानिय्येल का पाठ

दानिय्येल के प्राचीन यूनानी संस्करण और लातीनी वल्गेट में तीन ऐसे अनुच्छेद शामिल हैं जो इब्रानी हस्तलिपियों में नहीं पाए जाते। ये अनुच्छेद बाइबिल के रोमन कैथोलिक और ऑर्थोडॉक्स संस्करणों में शामिल हैं, लेकिन प्रोटेस्टेंट संस्करणों में नहीं।

अर्थ और संदेश

दानिय्येल का मुख्य विषय यह है कि परमेश्वर सर्वप्रधान है: वह मानवता और सारी सृष्टि के लिए अपने उद्देश्यों को पूरा करेगें। इतिहास परमेश्वर के राज्य की ओर एक अटल यात्रा पर है, जिसमें परमेश्वर की संप्रभुता पूर्ण रूप से साकार होगी। परमेश्वर अपने लोगों का न्याय करते हैं और उन्हें बचाते हैं, सार्वभौमिक स्तर पर इतिहास को अपनी इच्छा के अनुसार नियंत्रित करते हैं, और अन्यजातिय राज्यों और राजाओं को उठाते या गिराते हैं। उन्होंने निर्धारित किया कि बँधुवाई कब समाप्त होगी (9:18–19), और वह बुराई की शक्तियों को पराजित और नियंत्रित करते है (4:30, 32; 7:8, 20–21; 10:13; 11:28, 30–32)। स्वर्गीय शक्तियां उनके आगे सिर झुकाती हैं (3:28; 4:23, 35; 5:5; 6:21; 8:16; 9:21; 10:5, 13; 12:1), और उनके पास मृतकों को जीवित करने की शक्ति है (12:1–3)। उनकी बुद्धि सभी चीजों को नियंत्रित करती है (3:18; 11:35)। वह उन लोगों का चयन और अनुमोदन करते हैं जो उनकी दृष्टि में प्रिय और अति प्रतिष्ठित हैं (9:23; 10:11, 19)। परमेश्वर अपने राज्य को सारी पृथ्वी पर सदा के लिए स्थापित करते हैं, और उनके लोग अपने राजा, मनुष्य के पुत्र (7:13, 22; भज 110:1; मत्ती 24:27–44; 25:31; 26:2, 64; मरकुस 14:62; प्रका 1:7 देखें) के साथ उस पर शासन करेंगे।